H-1

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 089173

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 01-04-2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	4
2	6	20	5
3	6	21	5
4	6	22	6
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर [signature] संकेतांक 3 3 5 5 9

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1. (i)	घड़ी का (अ)
	(ii)	गौतम बुद्ध की मुद्रा (स)
	(iii)	रघुवीर सहाय (ब)
	(iv)	रामचरितमानस (द)
	(v)	जगधर की (अ)
	(vi)	नंगातलाई गाँव का (ब)
	(vii)	कोका बेली (अ)
	(viii)	कागद कोरे (स)
	(ix)	संवाद के लिए (द)
	(x)	उलटा पिरामिड शैली (ब)
12	(xi)	अलग-अलग विषय के समाचारों के लिए (अ)
	(xii)	खेल समाचारों के लिए (ब)

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	2. (i)	प्रसाद गुण 1
	(ii)	क्लिष्टत्व दोष 1
	(iii)	कुण्डलिया छंद 1
	(iv)	2 मात्राएँ 1
	(v)	दृष्टान्त अलंकार 1
6	(vi)	मानवीकरण अलंकार में 1
	3. (i)	विश्व के किसी भी देश में के पास ऐसी भूमि और संसाधन नहीं है, जो उसे सब प्रकार से सम्पन्न बना सकें। 1
	(ii)	प्रत्येक देश को किसी न किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप एक देश को दूसरे देश से दबना पड़ता है और अनिवार्य रूप से अवांछित समझौते करने पड़ते हैं। 1
	(iii)	भारत ने जब परमाणु परिक्षण किया तब यह प्रतिक्रिया हुई की परमाणु परिक्षण के पश्चात विश्व ने हम पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए थे 1

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) इराक पर प्रतिबंध लगने पर उसे दाने - दाने के लिए तरसना पड़ा।

(v) परमाणु परिक्षण करने के पश्चात भारत को विश्व के द्वारा कई प्रतिबंध के प्रतिबंध लगाए थे। क्या हमारे देश का कोई काम रुका? क्या देशवासियों को किसी कष्ट का सामना करना पड़ा? कभी नहीं। अर्थात भारत को कष्टो का सामना नहीं करना पड़ा।

6

(vi) शीर्षक - विश्व की भूमि

4. (i) मीरा ने राम रत्न रूपी धन पाया।

(ii) सतगुरू ने अमोलक वस्तु मीरा को दी।

(iii) मीरा ने खब कुध होकर राम रत्न धन रूपी धन पाया।

(iv) मीरा के धन की यह विशेषता है कि इस धन को जो कोई चुराकर लेवें वह दिन - दिन और बढ़ता जाएगा।

6

(v) सत की नॉव खेवटिया सतगुरू है।

(vi) शीर्षक - मीरॉ की राम भक्ति।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ब

5. रामचंद्र शुक्ल समवयस्क हिन्दी-प्रेमियो की में निम्नलिखित लोग शामिल थे :
बाबा भगवानदास जी हालना, पं. बद्रीनाथ गौड़, पं. उमाशंकर द्विवेदी, पं. लक्ष्मीनारायण चौबे इत्यादि ।

6. लेखक फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित आँचलिक कहानी 'संवदिया' में लेखक बताते है कि मोदिआइन 'काबुली-कायदा' सुनते ही तमककर खड़ी हो गई । कुछ साल पहले गुल मोहम्मद आगा गाँव में कपड़ा बेचने आया करता था । वह मोदिआइन के ओसारे दुकान लगाता था । वह कपड़ा उधार देते समय बहुत मीठा बोला करता था और वसूली करते समय जोर-जुल्म से एक के दो लेने की कोशिश करता था एक दिन गाँववालो ने उसकी पिटाई कर दी । मोदिआइन भी उसी की तरह करने लग गई थी और वह उससे बहुत चिढ़ती थी इसलिए वह काबुली कायदा का नाम सुनते ही चिड़ जाती थी ।

2

7. 'कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित 'सरोज स्मृति' कविता में कवि निराला जी अपनी दिवंगत पुत्री के विवाह को स्मरण कर इस कविता को लिखते है। कवि निराला ने अपने जीवन में कई संघर्षों का सामना किया । कवि कहते है कि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2		विवाह के समय पुत्री सरोज अत्यंत सुंदर लग रही है। पुत्री सरोज माँ विहिन थी। उससे विवाह के समय दी जाने वाली शिक्षा भी पिता द्वारा दी गई थी। पुत्री सरोज विवाह के कुछ दिनों बाद पुत्री सरोज मृत्यु को प्राप्त हो गयी थी। कवि निराला ने अपनी बेटी का तर्पण अपने समस्त अच्छे कर्मों का अर्पण कर पुत्री सरोज का तर्पण किया गया था।
2	9.	लेखक प्रेमचंद द्वारा रचित पाठ 'सूरदास की झोपड़ी' में दलित व शोषित वर्ग का अंकन किया गया था। भैरों ने शत्रुतावश सूरदास की झोपड़ी जला दी और उसके पैसे चुरा लिए थे। जगधर को पता चला कि सूरदास की रुपयों की पोटली भैरों ने चुराई है तो वह भैरों से उन रुपयों में से आधे लेना चाहता था लेकिन भैरों ने उसे नहीं दिए थे तब जगधर का मन खोया लेकर गलियों में चक्कर मे न लगा। वह बहुत बेईमानी करता था। जगधर ने जब भैरों ने उसे आधे पैसे नहीं दिए तब सूरदास के पास जाकर बदनियत से सुभागी और सूरदास को बता दिया की रुपयों की पोटली भैरों ने चुराई थी।
2	11.	प्रतीप अलंकार की परिभाषा ⇒ प्रतीप का अर्थ उल्टा होता है। प्रतीप अलंकार उसे कहते हैं जिसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलटकर उपमान को ही उपमेय कह दिया जाता है तो वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।

B.S.E.R.-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		उदाहरण → "चंद्रमा मुख के समान सुंदर है।"
2	12.	कविता में बिम्ब और छंद का अत्यधिक महत्व होता है। बिम्ब और छंद के बिना कविता की कल्पना नहीं की जा सकती है। कविता रचना करते समय हमारे मन कुछ चित्र उभरकर आते है जिससे कविता की रचना की जा सके। कविता रचना करते समय छंदो के माध्यम से कविता में गेयता आती है। कविता रचना करते समय उचित लय, गति, यति, तुक ताल आदि का ध्यान अति आवश्यक होता। बिम्बों के माध्यम से कविता रचना करते समय हमें आसानी होती है।
2	13.	समाचार लेखन में इंट्रो (मुखड़े) सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम है। समाचार लेखन में इंट्रो, बॉडी व समापन के माध्यम से समाचार लिखे जाते है। इंट्रो (मुखड़ा) में उल्टा पिरामिड शैली के प्रथम चार ककार (क्या, कौन, कब, कहाँ) उपयोग मे लाये जाते है। मुखड़ा अर्थात मे प्रारम्भिक पंक्तियों एवं महत्वपूर्ण पंक्तियों को लिखा जाता है। और उसके बाद बॉडी व समापन मे घटना का विस्तार से वर्णन किया जाता है। इसमे सबसे महत्वपूर्ण खबरों को इंट्रो में फिर उससे महत्वपूर्ण खबरों को अर्थात इसे घटते क्रम में लिखा जाता है।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	14.	विशेष लेखन के क्षेत्र में खेल पत्रकारिता की विशेषताएँ निम्न प्रकार से है :-
		(i) विशेष लेखन के क्षेत्र में खेलो के लिए खेल के नियम, उसके सिद्धांत का ध्यान रखा जाता है।
2		(ii) विशेष लेखन के क्षेत्र में खेल पत्रकारिता में उसकी शैली अर्थात खेलो के बारे में पत्रकारिता कथात्मक शैली में लिखे जाते हैं। खेलो के बारे में खेल की बारिकियो का ध्यान रखना पड़ता है।
	15.	लेखक भीष्म साहनी का साहित्यिक परिचय
2		लेखक भीष्म साहनी का जन्म सन 1915 में रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ। इनका व्यक्तित्व सरल एवं सादगीपूर्ण था। लेखक भीष्म साहनी जी के बड़े भाई का नाम बलराज साहनी था। लेखक भीष्म साहनी जी नेताओ का आदर सम्मान करते थे। इनकी रचनाएँ निशाचर, पाली, डायन, वाङ्मय, भटकती राख, पहला पाठ (कहानी संग्रह) झरोखे, कड़िया, तमस, बसंती, मय्यादास की माड़ी, नीलू नीलिमा नीलोफर इत्यादि। इनका निधन 2003 में हुआ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. रघुवीर सहाय का साहित्यिक परिचय

प्रसिद्ध साहित्यकार व प्रमुख पत्रकार कवि रघुवीर सहाय का जन्म 1929 में लखनऊ (उत्तरप्रदेश) में हुआ। कवि रघुवीर सहाय पेशे से एक पत्रकार थे इनकी कविताएँ बाजार की बैलीस भाषा में लिखी गई है। इन्होने राजनीतिक भ्रष्टचार सामाजिक विसंगतियों जो कि समाज में व्याप्त है उसे अपने काव्य लेखन में के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार और छल प्रपंचो का पर्दाफाश किया है। इन्होंने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। इनकी आत्महत्या के विरुद्ध हँसो - हँसो जल्दी हँसो, सीढ़ियों पर धूप में और लोग भूल गए है कविताओं की रचना की है। इनका निधन 30 दिसंबर 1990 में हुआ।

(2)

8. कवि विद्यापति द्वारा रचित 'पद' में कवि कृष्ण के गोकुल को छोड़कर मथुरा चले जाने के बाद नायिका राधा के विरह का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह नायिका विरह के कारण अत्यंत दुबली हो गयी है वह जमीन को पकड़कर बैठ जाती है और वह दुर्बल होने के कारण उठ भी नहीं पाती है। वह नायिका कातर व दृष्टि से चारो तरफ देखती रहती है। उसके कमल रूपी नयनों से निरंतर आँसू बह रहे है। इसमें नायिका राधा के विरह का वर्णन किया गया है।

(2)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	10.	लेखक द्वारा रचित पाठ "माल 'अपना मालवा खाऊ-उजाड़ू' के माध्यम से कहते है कि अमेरिका की खाऊ - उजाड़ू जीवन पद्धति ने दुनिया को प्रभावित किया है। अमेरिका के लोग अपनी इस जीवन पद्धति को नही छोड़ना चाहते हैं। इसके कारण मालवा क्षेत्र संसाधनो से भरा-पूरा क्षेत्र आज विरान अर्पात उजाड़ दिया गया है। खाऊ-उजाड़ू पद्धति के द्वारा लोगों ने पाताल से भी पानी को खींच लिया है। मालवा क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग धन्धे, फैक्ट्रियों आदि के कारण वहाँ पर्यावरण प्रदुषण बढ़ गया है; निरंतर बहती नदियाँ प्रदुषण के कारण दूषित हो गयी है। अत: अमेरिका की खाऊ - उजाड़ू जीवन पद्धति से दुनिया पर विपरित प्रभाव पड़े हैं।

खण्ड - स

	17.	प्रसिद्ध सुफिसंत व प्रेममार्गी शाखा के प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'बारहमासा' 'पद्मावत' से संकलित के माध्यम से कवि जायसी जी ने सिंहल देश की राजकुमारी नागमती और चितौड़गढ़ के राजा रत्नसेन के प्रेम का वर्णन इन बारह महिनों के माध्यम से किया है। रानी नागमति अपने प्रियतम के विरह मे दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती जा रही है। रानी नागमती ने अपने प्रेम का वर्णन चार महिनों में पड़ने वाली अत्यधिक सर्दी के माध्यम से किया है। अगहन के महीने मे रानी नागमति को अत्यधिक विरह-वेदना हो रही है। सर्दी पड़ने के कारण उसका शरीर थर-थर कॉंप

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रहा है। नागमती कहती है कि हे प्रियतम ! मेरा शरीर इस भयंकर विरह वेदना को सहन नहीं कर पा रहा है। अर्थात हे प्रियतम तुम कहाँ हो आकर मेरे गले लग जाओ क्योंकि तुम्हारे बिना यह माघ के महिने का जाड़ा उतरेगा नहीं। नागमती कहती है कि हे प्रियतम सर्दी के कारण सूरज भी लंका अर्थात दक्षिणायन में जाकर तपने लगा है।

अभिप्राय यह है कि नागमती की विरह-वेदना अत्यधिक बढ़ गयी है। पूस के महीने की सर्दी के कारण उसका शरीर थर-थर काँप रहा है। विरह रूपी बाज उसके जीवित शरीर को खाए जा रहा है अर्थात वह मुझे मरने पर भी नहीं छोड़ेगा। नागमती विरह के कारण कहती है कि सर्दियो में दिन छोटे और राते बड़ी होने लगती है जिसके कारण विरह का दुख असहनीय हो गया है। आशय यह है कि विरह के कारण रानी नागमति दिन-प्रतिदिन क्षीण अर्थात होती जा रही है।

3

BSER-179/2024

19. लेखक प्रेमचंद द्वारा रचित पाठ सूरदास की झोपड़ी में दलित एवं शोषित वर्ग की व्यथा कथा का चित्रण किया गया है। सूरदास एक दृष्टिहीन व भिखारी है। वह भीख माँगकर अपना जीवन व्यतीत करता था। सूरदास एक अनाथ बालक मीठुआ का पालन-पोषण करता था। भैरो की पत्नी सुभागी अपने पति की मार से बचने के लिए सूरदास की झोपड़ी में छिप गयी और सूरदास के हस्तक्षेप के कारण भैरो उसे मार न सका। लेकिन भैरो ने रात्रि में शत्रुतावश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बदला लेने के लिए सूरदास की झोंपड़ी में आग लगा दि और उसके पैसे चुरा लिए थे। सूरदास बहुत दुखी हो गया और बिलख-बिलख कर रोने लगा। जगधर को यह पता चल गया था कि सूरदास की झोंपड़ी में आग भैरों ने लगाई थी और उसके पैसे चुरा लिए थे।

जगधर के मन में ईर्ष्या हो गयी और उसने ईर्ष्या में यह बात भुमागी और सूरदास को बता दी। सूरदास अपनी आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त रखना चाहता था क्योंकि अगर वह बता देता कि वे रुपये मेरे हैं तो गाँव वाले बाते बनाते की अंधे भिखारी के पास इतने पैसे कहाँ से आए? अगर उसे उसके पास पैसे हैं तो वह भीख क्यों माँगता है? और कहा जाता है कि भिखारियों के लिए धन संचय पाप संचय के बराबर होता है। इसलिए सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था।

(4)

18. लेखिका ममता कालिया द्वारा रचित 'दूसरा देवदास' पाठ में युवा मन की संवेदना विचार आदि को व्यक्त किया गया है। संभव अपनी नानी के घर गया था। वहाँ पर संभव अपने नानी के कहने पर हर की पौड़ी पर आरती के लिए जाता है। आरती के समय संभव नदी में स्नान करने गया था और आरती होने के बाद संभव पण्डित जी के पास तिलक लगवाने गया और कहा पण्डित जी आज तो देरी हो गयी लेकिन समय पर आ जाएंगे। तभी एक प्यारी

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

नाम की लड़की संभव के पास भीगी हुई साड़ी में आकर खड़ी हो जाती है उसकी भीगी हुई साड़ी से संभव के कुर्ते का एक कोना गीला हो जाता है। तब पण्डित जी ने दोनों को युगल अर्थ में लेकर आशीर्वाद दिया कि जब भी आना, दोनों साथ में आना, गंगा मैया तुम्हारी हर मनोकामना पूरी करें। यह सुनकर दोनों अकबका गए और छिटककर दूर खड़े हो गए। इसके बाद संभव को उस लड़की से प्रेम हो गया था। इसलिए कहा गया है कि प्रेम के लिए किसी जगह, समय कोई जरूरी नहीं होता है प्रेम तो कहीं भी, किसी समय और किसी से भी हो सकता है। संभव उस लड़की से मिलने के लिए कल फिर हर की पौड़ी पर गया। संभव को कल से सिर्फ वह लड़की ही दिखाई दे रही थी संभव के मन में उस लड़की ने उथल-पुथल पैदा कर दी।

3

खण्ड - द

20. व्याख्या

"दुरंत जीवन - - - - - - - - प्रियं भवति।"

- सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग - 02 से गद्य खंड में 'कुटज' पाठ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से संकलित है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

• प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि कुटज के पौधे की विशेषताएँ का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कुटज विपरित परिस्थितियों में भी लहलहाता रहता है।

• व्याख्या ⇒ प्रस्तुत गंधाश के माध्यम से लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी कुटज के माध्यम से हमें विपरित परिस्थितियों में भी खुश के रहने का संदेश देते हुए कहते है कि कुटज के पौधे मे दुगुनी शक्ति होती है। कुटज हमे कठिन उपदेश व संघर्ष करने की शक्ति देते है। इसी तरह से जीन भी एक कला है। लेकिन आज वर्तमान में जीवन कला नहीं तपस्या है। अगर मनुष्य को जीना है तो प्राण ढाल दो अपने लक्ष्य को पूरा करने में। लेकिन क्या जीना इतनी बड़ी बात है। आज वर्तमान मे यह सारा संसार अपने मतलब के लिए जी रहा है। कवि याज्ञवल्क्य ने भी यही कहा है और वह बहुत बड़े ऋषि थे। इन्होने अपनी भार्या या पत्नी से कहा है कि इस दुनिया मे सब कुछ स्वार्थ के लिए ही है। आज वर्तमान में व्यक्ति को पुत्र व पुत्री प्रिय नहीं है, पत्नी प्रिय नहीं है सब अपने मतलब के लिए जिते है और स्वार्थ पूरा होते ही उसको बाहर फेंक देते हैं। इसी तरह कबीर थे उनसे लोगो ने अपने मतलब के लिए रखा और बाद में उसे बाहर फेंक दिया। लेकिन वह बहुत खुश था। इसी तरह कुटज का पौधा होता है लेकिन वह धूप, गर्मी, लू, तूफान आदि

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सब सहन कर लहलहाता रहता है।

• विशेष ⇒ (i) प्रस्तुत पद्यांश में आज वर्तमान में स्वार्थी लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

(ii) प्रस्तुत गद्यांश में कुटज का पौधा विपरित परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की शक्ति देता है।

(iii) भाषा सरल, सहज व प्रवाहमयी है।

5

4+1

21. व्याख्या

"पुलिक सरीर _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ जितावहिं मोही।"

• सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी साहित्य की पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-02 से पद्य खण्ड में भरत-राम का प्रेम रामचरितमानस के (अयोध्याकाण्ड) से कवि तुलसीदास द्वारा रचित है।

• प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश में भक्तकवि गोस्वामी तुलसीदास जी प्रस्तुत पंक्तियो के आधार पर श्रीराम के वनवास चले जाने के पश्चात भरत की स्थिती का चित्रण करते हुए कहते हैं कि -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

• व्याख्या ⇒ प्रस्तुत पधांश के माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास वर्णन करते हुए कहते हैं कि भरत चित्रकूट की सभा में पुलकित शरीर से खड़े हो गए हैं और उनके नेत्रों से निरंतर आँसुओ की जलधारा बह रही है। चित्रकूट की सभा में भरत मुनिवर वशिष्ट की आज्ञा पाकर कहते हैं कि मेरा कहना तो मुनिवर वशिष्ठ ने पहले ही पूरा कर दिया है अर्थात मैं जो कुछ कहना चाहता था वो मुनिवर वशिष्ठ ने कह दिया है और इससे अधिक मैं क्या कहूँ। भरत जी आगे कहते हैं कि मैं अपने स्वामी श्रीराम का स्वभाव अच्छी प्रकार से जानता हूँ। मेरे प्रभु श्री राम तो अपराधियों पर भी क्रोध नहीं करते है और मुझ पर उनकी विशेष कृपा रही है। मैंने खेल मे कभी भी श्रीराम का क्रोध या गुस्सा नहीं देखा है। मैं बचपन से ही अपने प्रभु श्रीराम के साथ रहा हूँ। इन्होंने कभी भी मेरे मन को नहीं तोड़ा है। मुझ पर इनकी विशेष कृपा रही है। प्रभु श्री राम बचपन मे मुझे हारता देखकर स्वयं हारकर मुझे जिता देते थे। मैंने कभी भी श्रीराम के क्रोध को नहीं देखा है।

• विशेष ⇒ (i) प्रस्तुत पद्यांश में भरत जी श्रीराम के वनवास चले जाने के बाद भरत की स्थिती का चित्रण हुआ है।
(ii) प्रस्तुत पधांश में श्रीराम की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
5		(iii) भाषा सरल, सहज व प्रवाहमयी है।
		(iv) अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।
4+1		

22\. निबंध लेखन

हमारा स्वास्थ्य और भोजन

रूपरेखा :-

- प्रस्तावना
- हमारा स्वास्थ्य और भोजन का महत्व
- हमारा स्वास्थ्य और भोजन के सकारात्मक प्रभाव
-

- प्रस्तावना :- ⇒ आज वर्तमान युग में विश्व में अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैल रही है जिसके कारण लाखों व्यक्ति प्रति वर्ष मौत के शिकार होते है। आज वर्तमान में हमारा देश जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। हमें हमारे स्वास्थ्य और भोजन का ध्यान रखना अति आवश्यक होता है। क्योंकि हम देख चुके है पहले 2019 में कोरोना वायरस के अंतर्गत लाखों व्यक्ति मौत के शिकार हो गए थे। इसी कारण हमें हमारे स्वास्थ्य और भोजन का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

• हमारे स्वास्थ्य और भोजन का महत्व ⇒ आज वर्तमान युग में हमारा देश प्रगति पथ की ओर अग्रसर है जिसके कारण हमारे देश में विभिन्न विभिन्न प्रकार के भोजन पकाये जाते है। हमें हमारे स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सिर्फ घर पर बना हुआ खाना खाना चाहिए क्योंकि इसके द्वारा किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं फैलती है और हम स्वस्थ्य रहते है लेकिन बाहर के खाने में कई प्रकार की चीजों की मिलावट की जाती है जिससे हमारे स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ता है।

• हमारा स्वास्थ्य एवं भोजन के सकारात्मक प्रभाव ⇒ हमें हमारे स्वास्थ्य को ही ध्यान में रखकर भोजन करना चाहिए इसके सकारात्मक प्रभाव निम्न प्रकार से है:-

(i) यदि हम अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर भोजन करेगें तो हमे कोई बीमारी भी नहीं होगी।

(ii) हमें हमारे स्वास्थ्य को सही रखने के लिए प्रति दिन सुबह योगाभ्यासन करना चाहिए।

(iii) हमें बाहर अर्थात किसी होटल का खाना नहीं खाना चाहिए क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के मसालो और तेल का प्रयोग किया जाता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

है जिससे हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

(iv) हमें स्वस्थ रहने के लिए हमारे भोजन पर विशेष ध्यान रखना चाहिए यद्यपि ज्यादा खाने से शरीर में मोटापा आ जाता है जो एक प्रकार से घातक बीमारी होती है।

उपसंहार ⇒ इस प्रकार से हमें अपने स्वास्थ्य का बहुत ज्यादा ध्यान रखना अति आवश्यक होता है। आज की युवा पीढ़ी भविष्य की नीति निर्माता है। इसलिए हमें हमारे भोजन मे फल, हरी सब्जी इत्यादि का सेवन करना चाहिए जिससे हमारा स्वास्थ्य अच्छा बना रहे और कोई बीमारी हमारे अंदर पैदा न हो सके। आज वर्तमान में हमारे स्वास्थ्य को सही रखने के लिए बहुत सी सरकारी अस्पताल खुल चुकी है। शराब का सेवन करने से हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है इससे कारण हमारे कई बीमारियाँ आ जाती है और हमे अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

6

1+4+1

समाप्त

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-179/2024